प्रेस-विज्ञप्ति

मैट्स विश्वविद्यालय के इम्पैक्ट सेंटर में एकदिवसीय एनपीटीईएल जागरूकता कार्यशाला

भारत सरकार के मानव संसाध विकास मंत्रालय द्वारा १९९८ में शुरू किये गए कार्यक्रम एनपीटीईएल की एकदिवसीय कार्यशाला , शीर्षक "एनपीटीएल जागरूकता कार्यशाला" , का आयोजन मैट्स विश्वविद्यालयके इम्पैक्ट सेंटर में स्कूल ऑफ़ इन्फार्मेशन टेक्नोलॉजी विभाग की अगुवाई में दिनांक १६ जनवरी २०१८ को आयोजित किया गया।

कार्यशाला का शुभारम्भ दीप प्रज्ज्वलन और माँ सरस्वती की वन्दना से प्रारम्भ हुआ ।इस अवसर पर मैट्स विश्वविद्यालय के कुलाधिपति श्री गजराज पगारिया, कुलपति श्री डॉ0 (प्रो0) बाइजू जॉन, मुख्य निदेशक श्री प्रियेश पगारिया , कुलसचिव श्री गोकुलानंद पांडा , श्रीमती डॉ0 दिपिका ढांड़ निदेशक प्रशिक्षण और नियोजन, विभागाध्यक्षा सुश्री रीता दीवानजी, विभिन्न विभागों के विभागाध्यक्ष के साथ साथ प्रशिक्षणार्थी उपस्थित थे।

इस कार्यशाला में आईआईटी कानपुर से प्रोफ़ेसर सत्यकी रॉय , संयोजक मीडिया टेक्नोलॉजी सेंटर एनपीटीईएल, सुश्री अंगना सेनगुप्ता और श्री अजय कन्नौजिया उपस्थित थे।

प्रोफ़ेसर सत्यकी ने एनपीटीईएल की स्थापना और उसके उद्देश्य को विस्तार से सबके समक्ष प्रस्तुत किया। उन्होंने बताया कि एनपीटीईएल एक तरह काआभासी विश्वविद्यालय है जो शुरुआत में सिर्फ सूचनाओं के भंडारण के लिए बनाया गया था। वर्तमान समय में इसकी उपयोगिता का अनुमान इस बात से लगाया जा सकता है कि देश के हर एक कोने से नए स्थानीय चैप्टर को स्थापित करने की मांग हो रही है। वर्ष २०१ 5 से एनपीटीईएल ने प्रमाण पत्र को प्रदान करना शुरू किया है । सुश्री अंगना सेनगुप्ता ने एसपीओसी की एनपीटीईएल के परिप्रेक्ष्य में भूमिका पर प्रकाश डाला।

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफ़ेसर ब्यजू जॉन ने आभासी विश्वविद्यालयों की वर्तमान समय में भूमिका की आवश्यकता पर प्रकाश डाला । उन्होंने कहा कि शिक्षा का गिरता स्तर एक चिंता का विषय है और ऐसे समय में एनपीटीईएल सुदूर बैठे छात्रो को वैश्विक स्तर की जानकारी विषय विशेषज्ञों के मध्यम से उपलब्ध कराने का महत्वपूर्ण कार्य कर रहा है । मैट्स विश्वविद्यालय इस महत्वाकांक्षी परियोजना को अंगीकार करने के लिए सदैव से तैयार था।

कार्यक्रम के अंत में प्रतिभागियो के कौतुहलिक प्रश्नों का समाधान भी किया गया।

साक्षात्कार प्रोफ़ेसर सत्यकी रॉय.....

प्रश्न: एनापिटीईएल क्या है?

प्रोफ़ेसर सत्यिकी: अपने स्थापना वर्ष १९९८ से लेकर २०१४ तक के शुरूआती दिनों में यह सिर्फ सूचनाओं के भण्डार के लिए बनाया गया था । जिसका उद्देश्य आडियो , वीडियो के माध्यम से ज्ञान को सभी के पास तक पहुंचाना था। भारत के प्रतिष्ठित संस्थानों जैसे आईआईटी , आईआईएससी आदि संस्थानों के विशेषज्ञ इसको तैयार करते है । जिसका लाभ इंटेरनेट , टीवी, रेडियो आदि के माध्यम से उठाया जा सकता है ।वर्ष

२०१५ से प्रमाण-पत्र देने की भी वयवस्था की गयी है । प्रमाण-पत्र के लिए सामान्य शुल्क लगाया गया है जिससे इसकी शुचिता भी बनायी जा सके।

प्रश्न: एनपीटीईएल के प्रमाणपत्र से क्या लाभ है।

प्रोफ़ेसर सत्यिकी: इसके प्रमाणपत्रो को उद्योगों और संस्थानों दोनों ही जगहो पर स्वीकारा जा रहा है । एआईसीटीई ने एनपीटीईएल के वीडयो को पाठ्यचर्या में शामिल करने का निर्णय लिया है । और इलेक्टिव विषयो के लिए विशेष रूप से यह बहुत ही लाभकारी है । नियोक्ता भी इसके प्रमाणपत्रों को , शिक्षको के मूल्यांकन के लिए प्रयोग कर रहे है।

प्रश्न : भारत जैसे देश में जहाँ विद्युत् , इंटरनेट आदि की सीमाएं मुंह खोले खड़ी हैं ऐसे में यह कितना लाभकारी है।

प्रोफ़ेसर सत्यिकी: भारत में दूरस्थ शिक्षा को लेकर ऐसे ही सवाल थे लेकिन वह सफल रहा है । एनपीटीईएल अभी भी अपने शुरूआती दौर में है जिसे चरणबद्ध तरीके से विक्सित किया जा रहा है । निकट भविष्य में यह अपनी उपयोगिता को सिद्ध कर देगा।

प्रश्न: वर्ष २०१६-१७ को भारत में इंटरनेट क्रान्ति के रूप में चिन्हित किया जा सकता है । ऐसे में एनपीटीईएल को कितना बल मिला है।

प्रोफ़ेसर सत्यिकी: निश्चित रूप से इस क्रान्ति ने सभी के पास तक इन्टरनेट की पहुँच को सुनिश्चित किया है और पूरा विश्वास है की , वह वर्ग भी जो संसाधनों के अभाव में इसका उपयोग नही कर पा रहा था वह भी लाभान्वित हो सकता है।

प्रश्न: पारंपरिक शिक्षा पद्धति और एनपीटीईएल की शिक्षा पद्धति में क्या अंतर है।

प्रोफ़ेसर सत्यिकी: दोनों में तुलना करने की आवश्यकता नही है क्योंकी दोनों के उद्देश्य ही अलग है । एनापिटीईएल सिर्फ शून्यता को ख़त्म करना चाहता हैजो पारंपरिक शिक्षा और वर्तमान आवश्यकता के मध्य दृष्टिगोचर होती है। पारंपरिक शिक्षा और आभासी विश्वविद्यालय मिलकर बहुत कुछ कर सकते है।

प्रश्न: एनपीटीईएल की भविष्य में क्या योजना है।

प्रोफ़ेसर सत्यिकी: एनपीटीईएल एक महत्वाकांक्षी योजना है जिसमे अभी बहुत कुछ किया जाना शेष है । शुरुआत में इसे शिक्षको के लिए बनाया गया था अभी इसका लाभ कोई भी उठा सकता है । कोशिश की जा रही है की प्रयोगात्मक विषयो के लिए व्यवस्था की जा जाय लेकिन अभी बहुत सफ़र तय करना बाकी है । एसपिओसी का विचार इसी परिप्रेक्ष्य में लाया गया है । जिन जगहों पर अच्छे लैब है उन्हें अध्ययन केंद्र बनाया जा सकता है। जहाँ शिक्षार्थी जा कर प्रयोगों को कर सके।